B.A Part-2 Paper-3 Topic- Uncontrolled observation
Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology, Vaishali Mahila College, Hajipur)

अनियंत्रित प्रेक्षण

(Uncontrolled Observation)

अनियंत्रित प्रेक्षण ऐसे प्रेक्षण को कहा जाता है जब उन लोगों पर जिनका की हम निरीक्षण कर रहे हैं निरीक्षण करते समय किसी प्रकार का नियंत्रण ना रहे। दूसरे शब्दों में जब प्राकृतिक पर्यावरण एवं अवस्था में किन्ही क्रियाओं का निरीक्षण किया जाता है साथ-ही-साथ क्रियाएं किसी भी समूह शक्तियों द्वारा

संचालित एवं प्रभावित नहीं की जाती हैं तो ऐसे निरीक्षण को अनियंत्रित निरीक्षण करते हैं।

यंग के अनुसार-"अनियंत्रित निरीक्षण में हमें वास्तविक जीवन परिस्थितियों की सूक्ष्म परीक्षा करनी होती है जिसमें विशुद्धता के यंत्रों के प्रयोग का या निरीक्षण घटना की सत्यता की जांच का कोई प्रयास नहीं किया जाता है।"

अनियंत्रित प्रेक्षण की उपयोगिता

सामाजिक व्यवहारों के अध्ययन में इस प्रकार का निरीक्षण बहुत उपयोगी

होता है इसका मुख्य कारण यह है कि सामाजिक घटना की कुछ इस प्रकार की प्रकृति होती है कि नियंत्रित निरीक्षण सदैव संभव नहीं होता। अधिकतर सामाजिक व्यवहारों की वास्तविकता परखने के लिए घटनास्थल पर ही उनका अध्ययन किया जा सकता है।

अनियंत्रित प्रेक्षण के दोष

- अनियंत्रित परीक्षण में प्रेक्षक के व्यक्तिगत पक्षपात की सदैव आशंका बनी रहती है उसके मनोभाव पूर्वाग्रहों

आदि कारणों से प्रेक्षण निष्पक्ष नहीं हो पाता है।

- इसमें मानव व्यवहार की कृत्रिमता का अवलोकन नहीं हो पाता है क्योंकि मानव व्यवहार प्रायः वैसा नहीं होता है जैसा कि वह बाहर से प्रतीत होता है। एक दुखी व्यक्ति कभी-कभी अपने दुख को समाज से छिपाकर बार-बार हंसने का प्रदर्शन करता रहता है। ऐसे ही कभी-कभी एक दुष्ट व्यक्ति भी एक संत की वेशभूषा पहनकर स्वयं के संत होने का आडंबर करता है।

- प्राकृतिक परिवेश में स्थितियों के परीक्षण द्वारा अध्ययन में संवेगों तथा भावों की प्रधानता रहती है और केवल संवेगों तथा भावों के स्मृति पर ही आधारित अध्ययन को वैज्ञानिक अध्ययन कहना कठिन है। इसमें ज्ञानेंद्रियों पर निर्भरता अधिक पाई जाती है अनियंत्रित परीक्षण पर आया नेत्र वह कभी-कभी नेत्र व कान दोनों पर ही आधारित रहता है अतः यदि अवलोकनकर्ता की इन ज्ञानेंद्रियों में संयोगवश कुछ दोष रहता है, तब ऐसे दोषों का प्रेक्षित सामग्री के अध्ययन

पर प्रत्यक्ष रूप से दूषित प्रभाव पड़ सकता है और इससे भ्रामक निष्कर्ष उपलब्ध हो सकते हैं।

- इसमें प्रेक्षण से प्राप्त निष्कर्षों में वस्तुपरकता व सत्यापनीयता, वैधता व विश्वसनीयता का प्रायः अभाव रहता है।